परमाणु बम की खोज विभीषिका और तृतीय विश्व की परमाणु ल्पिसो

*संयज कुमार यादव

शोधपत्र-राजनीति विज्ञान

सर्वप्रथम परमाणु बम अमरीका ने बनाया था। इस बम को बनाने की प्रेरणा सुविख्यात जर्मन वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्सटीन ने 2 अगस्त, 1939 को अमेरीका के फ्रेंकलिन रूजवेल्ट को लिखे उस पत्र में दी थी, जिसे अब 'अन्तरात्मा' का पत्र कहा जाता है। यद्यपि द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हो चुका था लेकिन तब तक अमरीका की उसमें सीधे तौर पर कोई भागीदारी नही थी। कुछ वैज्ञानिको ने जिनमें एजीलार्ड, विगनर, टेलर प्रमुख थे आइन्सटीन को प्रेरित किया कि वह अमरीकी राष्ट्रपति को नाभिकीय विखण्ड्न की खोज, जिसमें यूरेनियम का नाभिक एक मन्द न्यूट्रान के अवशोषण से विखण्डित होकर अत्यधिक मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न करता हैं, के बारे में बताएं और अमरीका द्वारा ऐसे बम बनाने के लिए कहे।जापान द्वारा अमरीकी नौसैनिक अड्डे पर्ल हार्बर पर हमले के बाद, सितम्बर 1941 में अमरीका में परमाणु बम बनाने का फैसला ले लिया गया। इस फैसले की परिणति प्रथम परमाणु बम के परीक्षण के रूप में 16 जुलाई, 1945 को हुई जो अलामोगोर्दो (न्यू मैक्सिको) के पास ट्रिनिटी में किया गया था। प्रथम परमाणु बम के परीक्षण को देखने वाले सैनिक अधिकारी और वैज्ञानिक इस बम की शक्ति से आश्चर्य चकित रह गए। अब अमरीका के पास एक ऐसा हथियार था, जो दुनिया के किसी भी देश को अमरीका के कदमों पर झुका सकता था। कुछ दिनों की अतिगोपनीय चर्चाओं के बाद जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर 1945 में 6 अगस्त 1945 को प्रातः 8 बजकर 16 मिनट पर पहला परमाणु बम का उपयोग किया गया।

इससे पहले ही जापान सम्भल पाये तीन दिन बाद ही जापान के शहर नागासाकी पर 9 अगस्त 1945 को एक परमाणु बम गिरा दिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध में अमरीकी राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमैन के आदेश पर की गई इस कार्यवाही से जापान को जर्बदस्त विनाश झेलना पड़ा था और विश्व युद्ध समाप्त हो गया। हिरोशिमा पर 'लिटिल बॉय' नाम का और नागासाकी पर 'फैट मैन' परमाणु बम गिराया गया था जो विश्व के इतिहास में अब तक का यह सबसे संहारक और विनाशकारी हमला था। [1]अमरीका ने ब्रिटेन और कनाड़ा के सहयोग से मैनहटन परियोजना के तहत कई गुप्त परियोजनाओं पर काम कर पहले परमाणु बम बनाये थे हिरोशिया में गिराया गया बम 'लिटिल बाय' यूरेनियम–235 से बनाया गया था। परमाणु बम का पहला परीक्षण 16 जुलाई 1945 को अलामोगोर्दो के पास ट्रिनिटी में किया गया परीक्षित बम 'द गजट' और नागासाकी में गिराया गया बम 'फैट मैन' प्लूटोनियम –239 से बनाए गए थे।[1] आजकल के शक्तिशाली नाभिकीय बमों से आकार में ये बहुत छोटे थे, जो आज कई देशों के पास उपलब्ध हैं इनकी विनाशकारी क्षमता तो उक्त परमाणु बमों से कई गुनी है परमाणु बमों ने हिरोशिमा में लगभग एक लाख 40 हजार और नागासाकी में लगभग 80 हजार लोगों की जान ले ली थी। इनमें से लगभग आधों की मौत तो बम गिराने के दिन ही और शेष की बाद में मौत हो गई थी इनमें से 20–22 प्रतिशत मौते घायल होने, जलने, विकिरण से जलने और कई घातक बीमारियों के कारण हुई थी। इसके बाद ज्यादा मौते ल्यूकेमिया और अन्य कैंसरों से हुई। इन कैसरों की वजह बम विस्फोट के कारण हुआ विकिरण था। दोनों शहरों में मरने वालों में अधिकांश आम नागरिक थे। नागासाकी पर बम गिराने के छह दिन बाद जापान ने 14 अगस्त, 1945 को समर्पण कर दिया था जिसके साथ विश्व युद्ध समाप्त हो गया था। जर्मनी ने समर्पण के पत्र पर 7 मई, 1945 को ही हस्ताक्षर कर दिये थे जिससे यूरोप में युद्ध थम चुका था। परमाणु बमों का मानसिक आधात झेल चुके जापान ने तीन गैर परमाणु सिद्धान्तों को स्वीकार कर लिया। इस कारण जापान कभी परमाणु हथियार हासिल नहीं करेगा। सन 1947 के जापान के सविधान की सर्वाधिक मौलिक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसके अन्तर्गत राष्ट्रीय नीति के रूप में युद्ध को त्यागने की घोषणा की गयी है। जापान स्वयं युद्ध के दु यपरिणाम देख चुका था और अमरीकी राजनीतिज्ञ भी यही चाहते थे कि वे जिस देश के संविधान का निर्माण कर रहे है, उसके द्वारा भविष्य में युद्ध के मार्ग को न अपनाया जाय। अतः युद्ध के परित्याग को जापान के सविधान का प्रमुख आधार बनाया गया है अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के उच्च आदर्श को स्वीकार करते हुए संविधान की प्रस्तावना में कहा गया हैं कि "हम

* पी.एच.डी रिसर्च स्कॉलर, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

जापानी लोग स्मपूर्ण कालों में शान्ति के आकांक्षी है हम स्वीकार करते है कि संसार की समस्त जातियों को अभाव तथा भय से मुक्त होकर शान्तिपूर्वक रहने का अधिकार है।'' [2]मित्र राष्ट्रों (अमरिका, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, आदि) की लक्ष्य समिति की 10–11 मई 1945 को लॉस अलामोस में हुई बैठक में क्योटों, हिरोशिमा योकोंहामा और हथियारों के जखीरे वाले शहर कोकुरा को सम्भावित लक्ष्य तय किया गया था[2] लक्ष्य चयन में कई कसौटिया तय की गई थी। जो आज भी प्रासंगिक है।

हिरोशिमा का दुर्भाग्य था कि वह अधिकांश कसौटियों पर खरा उतर रहा था। इसलिए 6 अगस्त को पहले परमाणु बम का प्राथमिक निशाना हिरोशिमा बना, कोकुरा ओर नागासाकी वैकल्पिक लक्ष्य थे 6 अगस्त का चयन इसलिए हुआ क्योकि उससे पहले घने बादलों के कारण लक्ष्य स्पष्ट नजर नहीं आ रहा था। जापन में हुए विनाशकारी बम विस्फोट के बाद जीवित बचे पीडितों को हिबाकुशा कहा जाता था। यह एक जापानी शब्द है। जिसका अर्थ है – विस्फोट पीडित लोग। जापना की सरकार ने इनमें से एक प्रतिशत लोगो की बीमारी की वजह विकिरण को माना। हिरोशिमा और नागासाकी में बने स्मारकों में हिबाकुशा लोगों के नामो की सूची भी लगी है। जिसकी मौत बाद में हुई थी। हर साल बरसी के अवसर पर इसमें नए नाम जोडे जाते हैं। 3 अगस्त 2008 तक इस सूची में चार लाख से ज्यादा हिबाकुशा नाम शामिल किये जा चुके हैं। इनमें 2 लाख 58 हजार हिरोशिमा के और एक लाख 45 हजार 980 नागासाकी के है। ोशिश के दौरान दोनो पक्षो के लोगो के व्यापक रूप से हताहत होने से बचाया जा सके। मित्र देशो की योजना अक्टूबर 1945 में क्यूशू पर और उसके पांच महीने बाद होन्शु पर हमले की थी।

अब अगर युद्व हो तो अनके बडे शहरों को नष्ट करने के लिए बेहद शक्तिशाली नाभिकीय हथियार उपलब्ध है यदि लक्ष्य स्थल पहाडियों से घिरा हो तो विस्फोट का असर ज्यादा घातक होगा। आज विश्व के सामने परमाणु आंतकवाद एवं जैविक हमला भयानक रूप में भावी वर्षो में भयानककारी सिद्व हो सकता है। आज पाक और चीन के नाभिकीय प्रक्षेपास्त्रों के निशानें पर हमारे अधिकांश औधोगिक और बडे – बडे शहर है जो शक्तिशाली नाभिकीय बमों से युक्त है इसलिए हमारे पास भी जवाबी हमले के लिए पर्याप्त संख्या में नाभिकीय हथियार होने चाहिए। इसी होड के कारण विश्व में परमाणु हथियार की खरीद फरोस्त एवं परमाणु परीक्षण किये जा रहे है। आज तृतीय विश्व के दशों एवं दक्षिणी एशिया मे परमाणु शक्ति परीक्षण की प्रतिस्पर्धा चल रही है इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति शक्ति के लिए संद्यर्ष है और विश्व के सभी राष्ट्र इस शक्ति को प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते है तथा इसके साथ ही सभी राष्ट्रों के हितो को शक्ति के द्वारा परिभाषित किया जा सकता है[3] सलिए विशेष तौर पर विकासशील देश/तृतीय विश्व के अधिकांश देश अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपना प्रभुत्व /प्रभाव कायम रखने के लिए परमाणु बम जैसी तकनीक प्राप्त करना चाहते है जो इसके बदले में वे अपने देश की आधारभूत संरचना को भी त्यागने के लिए तैयार है। [4]अगस्त 1945 के आरम्भ में अमरीका के पास केवल दो परमाणु बम थे और हिरोशिमा तथा नागासाकी में उनके प्रयोग के साथ ही अमरीका का परमाणु बमों का भण्डार खाली हो गया था। लेकिन 29 अगस्त 1949 को सोवियत रूस ने अपना प्रथम परमाणु परीक्षण किया तो अमरीकी एकाधिकार समाप्त हुआ।[4] इस तरह परमाणु शस्त्रो की प्रतियोगिता चल पड़ी। 4 मई 1951 में अमरीका ने और नवम्बर 1952 में सावियत संध ने प्रथम हाइड्रोजन बम शक्ति परीक्षण किए। 1952 में ब्रिटेन, 1960 में फ्रास और 1964 में चीन, 1974 में भारत, 1998 में पाकिस्तान 9 अक्टूबर 2006 को उत्तर कोरिया ने प्रथम परीक्षण एवं 25 मई 2009 को द्वितीय परमाणु परीक्षण किया। इस प्रकार 8 देशों ने तो अपनी परमाणु शक्ति परीक्षण करके दिखा दी। [5]इन आठ देशों के अतिरिक्त आठ देश ऐसे है जिनके पास परमाणु हाथियार बनाने की क्षमता है वे हैं– कनाड़ा, जर्मनी, इजराइल इटली जापान, दक्षिण अफ्रीका, स्वीडन, एवं स्विट्जरलैण्ड। लगभग एक दर्जन देश ऐसे है जो आगामी कुछ वर्षो में ही अपना परमाणु बम बना सकते है जैसे ईराक, ईरान, सीरिया, मिश्र, लीबिया, दक्षिण कोरिया, आदि।[5] इस होड के कारण ही भारत से 1971 की लडाई में परास्त होने के बाद पाकिस्तान के तत्कालीन पेधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने कहा– ''हम घास खाकर गुजारा कर लेगे लेकिन परमाणु बम अवश्य बनाएगे।'' इस परमाणु बम की भयानकता का अनुमान इस बात से लगा सकते है जब महान वैज्ञानिक अलर्बट आईस्टाइन से तृतीय विश्वयुद्ध के परिणामों के बारे में पूछा गया, तो उन्होनें अपने खास अंदाज में कहा''– मैं तृतीय विश्वयुद्ध के बारे में नहीं जानता पर चौथा विश्वयुद्ध लाठी–डण्डो से लडा जाएगा'' अपने इस जवाब के जरिए परमाणु अवधारणा के इस शिखर वैज्ञानिक ने तृतीय विश्व युद्ध की विनाश–लीला की पूरी तस्वीरे सामने रख दी। सर्वाधिक आणविक हथियार भी अमरीका और रूस के पास ही है।

पहली बार परमाणु विस्फोट के तथ्य :–

अमेरिका 16 जुलाई 1945 ट्रिन्टी, न्यू मैक्सिको, रूस 29 अगस्त 1949 सेमीपालातीस्क, उस्तुयर्त, रेगिस्तान ब्रिटेन 3 अक्टुबर 1952 मोन्टेबेलो द्वीप, आस्टेलिया, फ्रांस 13 फरवरी 1960 रेंगान, अल्जीरिया (तब फ्रांस द्वारा संरक्षित) चीन 16 अक्टुबर1964 लोपनोर, पश्चिमी चीन भारत 18 मई 1974 पोखरण, राजस्थान पाक 29 मई 1998 पाकिस्तान में उत्तरकोरिया 9 अक्टुबर 2006 किल्जु के पास (उत्तरकोरिया) हवादेरी

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. दी ट्रिब्यून 25.07.2008 2. जन सत्ता 27.02.2009 3. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति बी. एल. फाडिया पृष्ठ – 46 4. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति बी. एल. फाडिया पृष्ठ – 365 5. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति बी. एल. फाडिया पृष्ठ – 587